तत्त्वज्ञान की रूपरेखा

देवि मन्दिर के पुरोहितो व पुरोहिताइनो के लिये अध्ययन पाठ्यक्रम

संग्रहकर्ता
श्री मां
स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
चेतनानन्द सरस्वती

माघ - फाल्गुन 2060
(February 2004)

यह अध्ययनपाठ श्री मां को समर्पित है ।

श्री मां जो निरंतर हम सब को सर्वोत्तम कर्म करने के लिये उत्साहित करती रहती है ।

देवि मन्दिर, नापा द्वारासर्वाधिकारसुरक्षित 2004

तत्त्व ज्ञान
तत्त्वों की जानकारी

- तत् अर्थात् वह
- त्व अर्थात् आप
- तत्त्वस अर्थात् सिद्धान्त जो आप ही हैं

ये तत्त्व, 'हम कौन हैं'
जानने का रास्ता दिखाते हैं

कामकला

- कामकला अर्थात् अभिलषित गुण व भाव
- कामकला अर्थात् वासना या लालसा के गुण
- कामकला अर्थात् तीनो का अविरोध अथवा सन्तुलित त्रिकोण

तीन गुण

प्रकृति की विशेषता व लक्षण

प्रकृति की विशेषता व लक्षण

सत्त्व

सत्य, प्रकाश

शुद्ध निर्मल जीव

उद्योगिता, क्रियाशक्ति

रजस्

विविध रंग

उपयोगी, यथोचित्

लालसा, वासना

तमस्

अंधेरा, अज्ञान

विश्राम(सुस्ताना)

ज्ञान, विद्या

ये तीन सर्वत्र हैं

स्थूल शरीर	सूक्ष्म शरीर	कारण शरीर
प्रत्यक्ष	प्रत्यय	प्रकाश

- जो इंद्रियों से जाना जा सके
- जो मन से जाना जा सके
- जो ध्यान या अनुभव से जाना जा सके

अ	उ	म

और सर्बस्य व्यापक हैं

ब्रह्मा	विष्णु	शिव
महा सरस्वती	महा लक्ष्मी	महा काली
सृजन	पालन	परिवर्तन

एसा कुछ भी नहीं
जहां वे तीन न हों

आदि	मध्यम	अन्त
भूतकाल	वर्तमान	भविष्य
ऐं	ह्रीं	क्लीं

हर जीव पांच वास्तविक
तत्त्वों से बना है

1. पृथ्वी	क्षितिज
2. जल	आप,पानी
3. आग	तेज
4. पवन	मारूत
5. आकाश	भौम

ये चेतना के सात स्तर पर देखे जा सकते हैं

१. भूः
स्थूल शरीर

२. भुवः
सूक्ष्म शरीर

३. स्वः
कारण शरीर सर्व

४. महः
जीवन समूह

५. जाः
सर्व विद्या समूह

६. तपः
सर्व प्रकाश समूह

७. सत्यं
सतचितानन्द (अन्तःकरण चेतना)

चेतना के सात स्तर

1. स्थूल शरीर	इन्द्रियों से जानना
2. सूक्ष्म शरीर	मनमें जानना
3. कारण शरीर	अध्यात्मिक अनुभव से जानना
4. सर्व जीवन समूह	सब जो जाना जा सकता है
5. सर्व विद्या समूह	सर्व जानकारी अथवा ज्ञान
6. सर्व प्रकाश समूह	सर्व प्रकाश जिसमें ज्ञान विलीन हो जाता है
7. सतचितानन्द	सतचितानन्द का अनुभव जगत

समस्त जीवन चार ध्येय प्राप्तकरना दर्शाती है

१. धर्म — पूर्णहोने का आदर्श स्पष्ट करता है

२. अर्थ — आदर्श को पाने के लिये आवश्यक साधनों को प्राप्त करना

३. काम — प्रभूसे मिलनेकी इच्छा के सिवाय, शेष सर्व मनोकामनायें सफल करना अथवा उनका अन्त करना

४. मोक्ष — मुक्ति या अपनेको जानना

हर मनुष्य को जन्मसे कर्मके तीन ऋण चुकाने होते हैं

१. देवऋण	देवताओं के ऋण
२. पितृऋण	पूर्वजों का ऋण
३. आचार्यऋण	अपने गुरू व अध्यापकों का ऋण

देवऋण शोधन संसारके लिये योगदान से होता है

हमें संसारको उत्तमतर बनाना है क्यूंकि हमने यहां जन्म लिया है

पितृऋण शोधन पूर्वजों को सम्मान देनेसे होता है जो अपने कर्मसे निरूपण किया जाता है

हमें पुरखों को ऐसा सम्मान देना चाहिए जैसा हम चाहते हों तो हमें मिले जब हम वृद्ध हों और हमें अपने आगामी पीढी को ऐसी शिक्षा देनी होगी जैसी हम दुनिया बनाना चाहते हैं

आचार्यऋण शोधन होगा
जब हम गुरू अथवा
आचार्य के सिखाये
हुए मार्ग अनुसार
जीवन निर्वाह करेंगे

मोक्ष अर्थात् समस्त
ऋण से मुक्ति

ऋण से मुक्तहोने के लिये मनुष्य जीवन चार खंडो में विभाजित किया गया है

1. ब्रह्मचर्य
2. गृहस्थ
3. वनप्रस्थ
4. सन्यास

1. **ब्रह्मचर्य** अर्थात् मनुष्य जो भगवानके साथ रहे। परन्तु बहुधा यह विद्यार्थी जीवन दर्शाता है जहाँ हम दुनियामें कैसे रहें और अपना सहयोग कैसे दें यह सीखते हैं ।

2. **गृहस्थ** अर्थात् जो घरमें रहे, जो छतके नीचे रहे - प्रायः विवाहित जीवन जहां हम अपना अंशदान सृष्टि को देते हैं। हम सृष्टि को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं क्यूं कि हम यहां आये है।

3. **वनप्रस्थ** अर्थात् जो वनमें रहे - एक कदम घर के अन्दर और एक कदम बाहर, जहां हम दूरसे मत पूछते हैं अथवा प्रबन्ध करते हैं।

4. **सन्यास** अर्थात् जिसने अन्तःकरण में सत्य को स्थापित किया है, जो पूर्ण रूपसे स्वाधीन अथवा स्वतन्त्र है और सदा केवल सत्य पर अटल और ईश्वर भक्ति में लीन रहता है ।

शंकराचार्य ने सन्यासियों को दस वर्गों में विभाजित किया है जिसको दस्नामि कहते हैं

1. भारती	ज्ञान के प्रकाशसे परिपूर्ण
2. गिरी	पहाडोंमे रहने वाले
3. पुरी	नगरोंमें रहने वाले
4. सरस्वती	विद्वान
5. वन	जंगल में रहने वाले
6. अरण्य	कुञ्जों में रहने वाले
7. तिर्थ	तीर्थ स्थानों में रहने वाले
8. पार्वत	ऊंचे पर्वत पर रहने वाले
9. सागर	समुन्दर तट पर रहने वाले
10. नाथ	धर्मकी रक्षा करने वाले

प्रत्येक कार्यके चार पहलू हैं

1. ध्यान	अर्थात् चिन्तन अथवा सचेतना
2. ज्ञान	अर्थात् जानकारी अथवा बुद्धि
3. भक्ति	अर्थात् अनुराग अथवा उपासना व तपस्या
4. कर्म	अर्थात् क्रियाशीलता अथवा उद्योगिता

हर कार्य पूर्ण करने के लिये कुछ अंश ज्ञान व ध्यान का भी आवश्यक हैं। हम उतना ही ध्यान दे सकते हैं जितना हमारा उस कार्यसे लगन अथवा अनुराग है। इसलिये हर क्रियाकी सफलता में ज्ञान व ध्यान और अनुराग तीनो विद्यमान हैं। इस प्रकार वे एकदूसरेसे अलग नही हैं। हर कार्य में चारों एक साथ उपस्थित हैं।

हरएक गृहस्थीको जीवन में दस संस्कार अथवा आचार करने होते हैं

1. गर्भाधान — जीवन बीज कोधरना अथवा स्थापन करना
2. सीमन्तोन्नयन — गर्भके बच्चे और माता को आशीर्वाद देना
3. जातकर्म — जनमका धर्माचार
4. अन्नप्राशन — प्रथमबार बच्चेको ठोस आहार कराना (अन्न खिलाना)
5. विद्यारम्भ — लिपी केअक्षर सीखना

6. उपनयन	गायत्रीमन्त्र व यज्ञोपवीत की दीक्षा
7. वेदारम्भ	विद्या अध्ययन का आरम्भ
8. समावर्तन	अध्ययन कीअध्ययन की समाप्ति और आगे बढना
9. विवाह	गृहस्थ धर्म को अपनाना
10. अंत्येष्टि	अंत्येष्टि संबंधी आचार व क्रियाकर्म

प्रत्येक जीवधारी के लिये चार प्रकारका प्रकार्य आवश्यक हैं

1. ज्ञान व सूचना पद्धति
2. उन्युक्त व रक्षा पद्धति
3. रसद फैलाने अथवा चारों ओर भेजने की पद्धति
4. आहार जुटाने व मैल ले जाने के लिये पद्धति

समाजमें इन्हे कहते हैं

1. ब्राह्मण	ज्ञान व सूचना पद्धति
2. क्षत्रिय	उन्युक्त व रक्षा पद्धति
3. वैश्य	रसद फैलाने अथवा चारों ओर भेजने की पद्धति
4. क्षूद्र	आहार जुटाने व मैल ले जाने के लिये पद्धति

प्रकृतिमें पांच कोश अथवा खोल हैं

1. अन्नमय	पदार्थ के अनुकूल व अनुरूप
2. प्राणमय	पवन के अनुकूल व अनुरूप
3. मनमय	विचार के अनुकूल व अनुरूप
4. विज्ञानमय	प्रकाश के अनुकूल व अनुरूप
5. आनन्दमय	सतचितानन्दमय

अध्यात्मिक जिज्ञासु व साधकके लिये आठ प्रकारके आचरण हैं

1. वैष्णवाचरण
2. वेदिकाचरण
3. शिवाचरण
4. वामाचरण
5. दक्षिणाचरण
6. सिद्धान्ताचरण
7. योगाचरण
8. कुलाचरण

वैष्णावाचरण

अथवा ईश्वरीय प्रेरणा व उत्साह युक्त आचार

वेदिकाचरण

अर्थात् ज्ञानसे परिपूर्ण आचरण

शिवाचरण

अथवा अभ्यास का आचरण

वामाचरण

अर्थात् सबके साथ प्रेमका व्यवहार और अभ्यासको अपने जीवनमें उतारना

दक्षिणाचरण

अर्थात् उत्त्मत्राचरण जिससे दुनिया में कार्य करने की आवश्यकता कम हो

सिद्धान्ताचरण

शास्त्रोक्त आचार

शास्त्रोक्त आचार के सात अंग हैं

1. पूजा
2. पाठ
3. होम
4. संगीत
5. नृत्य
6. प्रवचन
7. अर्पणम्

पूजा	अर्थात् आराधना व अर्चना
पाठ	अर्थात् शास्त्रों का उच्चारण
होम	अर्थात् हवन -आगके सन्मुख धर्माचार
संगीत	अर्थात् ईश्वर के भजन गाना व संकीर्तन करना
नृत्य	अर्थात् भगवान के लिये नृत्य
प्रवचन	अर्थात् जो हम कर रहें हैं और वह क्यूं कर रहें हैं, उन पर व्याख्या
अर्पणम्	अर्थात् प्रेम से सेवा करना अथवा भेंट देना

योगाचरण

योगाचरण अर्थात् संयोग का आचरण

कुलाचरण

कुलाचरण अर्थात् श्रेष्ठता का आचार, एकाग्रचित समाधि अथवा संसारसे संपर्क भी उसी उत्तम भाव से करना

संस्कृत अध्ययन के छः विषय हैं

1. व्याकरण अर्थात् शुद्ध भाषा बोलने व लिखने की विद्या
2. उच्चारण अर्थात् शुद्ध बोलना
3. इतिहास व साहित्य
4. दर्शनशास्त्र अर्थात् तत्त्वविचार व ज्ञान विद्या
5. ज्योतिष्
6. पद्धोति अथवा भेंट चढानेकी पद्धति

उत्तम संस्कृत में सात छंद हैं

1. गायत्री — कविता के एक चरण में 24 शब्दांश हैं
2. उष्णिक् — कविता के एक चरण में 28 शब्दांश हैं
3. अनुष्टुप् — कविता के एक चरण में 32 शब्दांश हैं
4. बृहति — कविता के एक चरण में 36 शब्दांश हैं
5. पंक्ति — कविता के एक चरण में 40 शब्दांश हैं
6. त्रष्टुप् — कविता के एक चरण में 44 शब्दांश हैं
7. जगति — कविता के एक चरण में 48 शब्दांश हैं

शब्द का मार्ग

- शब्द ब्रह्मान् — है परमेश्वर का आवाज़ अथवा विश्व का अनन्त शब्द
- बिन्दु — है शब्द का पहला नुक्ता जो प्रत्यक्ष हुआ
- नाद — है आवाज़ की सूक्ष्म लहरें
- बीजा — है श्रव्य पद जो सूक्ष्म लहरें कहती है दर्शाती है
- शब्द — है आवाज़ जो सुनाई दे
- मन्त्र — है शब्द जो मन को अपने साथ खींच कर ले जाये
- वेदिक् शब्द — है जो परमेश्वर से मिलने का ज्ञान बताता है
- भौतिक शब्द — है जो बाहर की दुनिया के बारेमें बताता है

संसारी व प्रपंची विचारों को नियंत्रणमें रखके सब आवाज़ों को योगके ज्ञान में विलीन कर दो। सब विचारोंसे मुक्त होकर बीज पर ध्यान केन्द्रित करो। विचारधारा को सूक्ष्मसे अति सूक्ष्म बनाके बिन्दु में घुस जाओ - बिन्दु जहां आवाज़ का पहले प्रत्यक्ष हुआ था। बिन्दुसे शब्द ब्रह्मान् अथवा विश्व के अनन्त शब्द में लीन हो जाओ ।

चार्वाक तत्त्वज्ञान

चार्वाक लोकायत सिद्धान्त में विश्वास रखते थे। लोकायत सिद्धान्त अर्थात् केवल भौतिक संसार का अस्तित्त्व ही प्रमाणित अथवा सिद्ध हो सकता है। इनका कहना है कि जो कुछ भी मन में है, वह किसी समय इन्द्रियबोध था। हम जो कुछ भी सोच सकते हैं अथवा जान सकते हैं वह सब इंद्रियों के माध्यमसे ही होता है। प्रत्यक्ष अर्थात् ज्ञान जो इंद्रियों के माध्यमसे जाना गया हो।

तत्त्वज्ञान की छः माननीय पद्धतियाँ हैं।

1. न्याय
2. वैशेषिक
3. सांख्य
4. योग
5. पूर्व मीमांसा
6. उत्तर मीमांसा

न्याय

न्याय का कहना है कि सम्पूर्णज्ञान जानने के लिये, प्रत्यक्ष ज्ञान के अलावा और भी विकल्प हैं।

- प्रत्यक्ष अर्थात् विद्या जो इंद्रयों के माध्यमसे जानी जा
- अनुमान अर्थात् तर्कसे जानना
- उपमान अर्थात् आवश्यक समानताओं को देखके जानना
- शब्द अर्थात मौखिक ज्ञान अथवा प्रमाणित गवाही
- प्रकाश अर्थात जो अनुभवसे अथवा ध्यानमें जाना जाये

वैशेषिक

वैशेषिक अनुभव के छः प्रकारके अभिप्राय स्पष्ट करता है

1. अस्तित्त्व अथवा सत्ता
2. गुण अथवा विशेषता
3. उद्योगिता अथवा क्रियाशीलता
4. साधारणता
5. विशेषता अथवा विशिष्टता
6. स्वभाव

सर्व पदार्थों की जानकारी अथवा अनुभव, नौ तत्त्वो में सम्मिलित है

1. पृथ्वी
2. जल
3. अग्नि
4. वायु
5. आकाश
6. समय
7. प्रसार अथवा फैलाव
8. मन
9. आत्मा

सत्य तो यह है, कि
समस्त अस्तित्त्व, शून्य
आकाश के भवडंर में
अनन्त अदृश्य परमाणों
के संयुक्त होने से, बना है

सांख्या

सांख्या का कहना है कि अकेला परमाणु अस्तित्त्व के होने को नही समझा सकता। प्रकृति अथवा मायाशक्ति के अलावा पुरुष अथवा व्यक्तिगत आत्मा या चेतना की भी आवश्यकता है।

सांख्य बताता है कि प्रकृति का वर्णन चौबीस तत्त्वों से होता है।

1. अहंकार
2. चित्त
3. बुद्धि
4. मन
5. दृष्टि
6. आवाज
7. गन्ध
8. स्वाद वारुचि
9. स्पर्श ज्ञान
10. पृथ्वी

11. जल
12. अग्नि
13. वायु
14. आकाश
15. नेत्र
16. कर्ण
17. नाक
18. जिह्वा
19. खाल वा झिल्ली अथवा त्वचा
20. भुजायें
21. टांगें
22. जीभ
23. जनमेन्द्रियाँ
24. गुदा

चेतना, जिसको पुरुष कहते हैं, इन सभी का साक्षी है।

योग

योग बताता है कि जीवन का उद्देश्य अथवा लक्ष्य पुरुष व प्रकृति के मिलन की पूर्णता ही है और इस की प्राप्ति की विधि के आठ सीढ़ियाँ हैं।

योग के पथमें आठ सीढ़ियाँ हैं

1. यम
2. नियम
3. आसन
4. प्राणायाम
5. प्रत्याहार
6. धारणा
7. ध्यान
8. समाधि

यम

यम अर्थात् नियंत्रण व संयम
ध्येय व पथ का निर्देश करना

नियम

नियम अर्थात् अनुशासन व विनियम बनाना।
अपने समय, अपनी शक्ति और अपनी युक्ति
अथवा अपने साधनो का ध्यान व लेखा रखना
।

आसन

आसन अर्थात् शरीर को स्थिर करना।
शरीर की हरकत मन का भटकना दर्शाती है।

चार आसन ध्यान करने में सहायक हैं

1. पद्मासन - है पूरा कमल
2. स्वस्तिकासन, सिद्धासन - अपने पैरों को मोडकर ऐड़ी गुदा पर रखना
3. वीरासन - अपनी ऐड़ियों पर बैठना
4. भद्रासन - हीरे जैसा

प्राणायाम

प्राणायाम अर्थात् श्वास का संयम।

श्वास पांच प्रकार के हैं

1. प्राण सांस अन्दर लेना
2. अपान सांस बाहर फेंकना
3. उदान सांस को ऊपर उठाना
4. समान सांस को नितान्त (पूर्ण रूपसे) स्थिर व अचल और सम करना
5. व्यान अनिच्छुक त्यागना (अप ने आप निकलना)

प्रत्येक श्वासके तीन रूप हैं

1. पूरक सांस को भीतर लेना
2. कुम्भक सांस को रोक के रखना
3. रेचक सांस को बाहर छोडना

उत्तम प्राणायाम अनुपात है 1 : 4 : 2

प्रत्याहार

प्रत्याहार अर्थात् इन्द्रियों का निग्रह कर अभ्यन्तरमें एक बिन्दु में केन्द्रित करना।

धारणा

धारणा अर्थात् विचारणा करना। धारणामें तीन हैं।

कर्त्ता अथवा सोचनेवाला, सोचकी विषय वा बिन्दु और उनका आपसमें सम्बन्ध

ध्यान

ध्यान अर्थात् चिन्तन। चिन्तनमें केवल दो हैं। कर्ता, व चिन्तन की विषय। सम्बन्ध इतना गहरा है जो केवल अनुभवसे जाना जाता है।

उनके लिये कोई शब्द नही है जिससे बताया जाये।

समाधि

समाधि अर्थात् योग की पूर्णता।
केवल एक रह जाता है।

समाधि तीन प्रकार की होती है।

1. भाव समाधि
2. सविकल्प समाधि
3. निर्विकल्प समाधि

1. भाव समाधि में अभिज्ञता अथवा समागम का भाव होता है।
2. सविकल्प समाधि में मनुष्य विचार से सम्मिलित हो जाता है, फिरभी भिनता रहती है।
3. निर्विकल्प समाधि में पूर्ण समागम व विचार की शून्यता है।

समाधि के पांच पहलू हैं।

1. सालोक्य
2. सामीप्य
3. सरूपा
4. सदृश्य
5. सयूज

सालोक्य

सालोक्य अर्थात् समान लोक, वा असलियत के निर्देशन के अन्दर, अथवा एक साथ समान जगत में।

सामीप्य

सामीप्य अर्थात् समान उद्योगिता व क्रियाशीलता के साथ। जैसे ईश्वर कर रहा है, वैसे मैं भी कर रहा हूं।

सरूपा

सरूपा अर्थात् रूपके साथ। जैसा ईश्वरका रूप है वैसा मेरा भी है। मैं दर्पणमें देख रहा हूं।

सदृश्य

सदृश्य अर्थात् अनुभव से जानना। जैसे वह मुझे जान या देख रही है, वैसा ही मैं भी उन्हे जान व देख रहा हूं। हम दोनों को समान अनुभव है, और केवल हम दो ही हैं, तीसरा कोई विकल्प नहीं है।

सयूज

सयूज अर्थात् संयोग वा योग या मेल की पूर्णता।

पूर्व मीमांसा

पूर्व मीमांसा का तात्पर्य वास्तवमें है तन्त्र, अर्थात् अनुराग व भक्ति सहत सर्व अध्यात्मिक ज्ञान का अर्पण।

तन्त्र अर्थात् जैसे कपडा बुना जाता है, वैसे ही ज्ञानके विविध पहलों को जोड कर एक नियमबद्धता बनाना।

तन्त्र के छः तीस तत्त्व हैं

सदाशिव व शक्ति

1. सदाशिव अर्थात् शुद्ध चेतना
2. शक्ति अर्थात् शुद्ध ऊर्जा

ये दो भिन्न तत्व हैं लेकिन
आपस में मिलकर एक ही हैं

ईश्वर

3. ईश्वर तत्त्व कहते हैं शिव व शक्ति के मेल को।

उन्को अर्धनारीश्वर, दोनो पुरुष
व स्त्री एक साथ, भी कहते हैं।

शुद्ध विद्या

4. शुद्ध विद्या अर्थात् पवित्र ज्ञान।

आपने शिव की मूर्ती देखी होगी जिसमें आंखे अभी खोल रहा है और जैसे कह रहा है, मैं महसूस करता हूं कि मेरे अलावा कोई और भी है।

माया

5. माया अगला तत्त्व है।

वह मेरे से भिन्न है। मैं शिव हूं और वह है ईश्वरीय माँ, चेतना की सीमा।

काञ्चूकों

माया पांच काञ्चूकों अथवा अनुभव के रूप या प्रकार से जानी जाती है।

6. काल सम

7. न्याति प्रसार

8. राग	उद्योगिता
9. विद्या	नाम व रूप का ज्ञान
10. कला	गुण

पहले दस तत्त्व ऊपरसे नीचे के अनुक्रम में

1. सदाशिव
2. शक्ति
3. इश्वर
4. शुद्ध विद्या
5. माया
6. काल
7. न्याति
8. राग
9. विद्या
10. कला

पुरुष व प्रकृति

11. पुरुष एक व्यक्तिगत आत्मा या चेतना
12. प्रकृति अथवा समस्त जगत

अन्तःकरण

अगले चार तत्त्व एकसाथ अन्तःकरण (आन्तरिक चेतना) कहलाते हैं

13. अहंकार
14. चित्त
15. बुद्धि
16. मन

अहंकार

अहंकार अहं अथवा मैं का बोध

चित्त

चित्त अथवा बुद्धि व मन से प्राप्त की हुइ सारी जानकारी का मेल

बुद्धि

बुद्धि अर्थात् बाहरी पदार्थसंबधी ज्ञान अथवा अनुभूति के सब नाम व क्रियाऐं

मन

मन अर्थात् विषयों व पदार्थों के लिये व्यक्तिगत विचार। मन विशेषण व क्रियाविशेषण बताता है।

बुद्धि व मन

बुद्धि कहती है यह एक किताब है। मन कहता है यह एक अच्छा किताब है। 'अच्छा' अक्षर मन की व्याख्या है। बुद्धि व मन दोनों साथमें हैं, तो उस को चित्त कहा जाता है। चित्त अथवा विषय सम्बन्धी व स्वसंवेद्य अनुभूति, जगत जैसे वास्तवमें है और जैसे हम सोचते है, हमारा जगतसे सम्बन्ध।

आगामी बीस तत्त्व

आगामी बीस तत्त्व स्थूल जगत की परिभाषा करते हैं और हमारा उनसे सम्बन्ध बताते हैं ।

तन्मात्राऐं

पांच तन्मात्राऐं जिसके माध्यमसे जानकारी मिलती हैं

1. दृष्टि
2. शब्द
3. गंध
4. स्वाद
5. स्पर्श ज्ञान

महाभूत

पांच महाभूत जीवनके आवश्यक वस्तुऐं है।

1. पृथ्वी
2. जल
3. अग्नि
4. वायु
5. आकाश

ज्ञानेन्द्रयां

पांच ज्ञानेन्द्रियाँ ज्ञान पाने के माध्यम हैं

1. नेत्र
2. कर्ण
3. नाक
4. जीभ
5. खाल या त्वचा

कर्मेन्द्रयां

पांच कर्मेन्द्रियां कर्म करने के उपकरण हैं

1. बांहें
2. टांगें
3. जीभ
4. जनमेन्द्रियां
5. गुदा

ये तत्त्व बताते हैं कि कैसे देवतत्त्व अस्तित्त्व प्रत्यक्ष में उतरा है। मूल को वापस जानेके लिये हमें वही रास्ते से उलटे पांव जाना होगा।

विधि (विधान) को उलटा दो

कर्मेन्द्रियों के निग्रह से प्रारम्भ करें क्योंकि इन्हीं के माध्यमसे बाह्यजगत से सम्बन्ध है।

कर्मेन्द्रियों को नियंत्रण मे लाकर ज्ञानेन्द्रियों को संयम व वश में लाना होगा।

अस्तित्त्व के पांच तत्त्व और उनके जानने की पांच विधियां सूक्ष्म शरीर के अन्दर पहचानो: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, दृष्टि, शब्द, गंध, स्वाद, स्पर्श ज्ञान। ऊरजा (कुण्डलिनी) को चक्रोंमें उठने दो और बीस तत्त्वों को संतुलन अथवा समन्वय में रखो।

अभी मन, बुद्धि, चित्त को समन्वय में लाओ। अहंकार का दमन करो। यह शरीर प्रकृति से बना है - इस जगत का एक व्यक्तिगत रूप, जो पुरुष देखता है। यह पुरुष (अथवा आत्मा)

काल, आकाश, ज्ञान, उद्योग्ता में और अपने गुणों सहित देखा गया है।

गिरहणबोध के रूपों, अथवा इन इकतीस तत्वों से ऊपर उठ कर हम माया में आ जाते हैं। फिर हम शिव को शुद्ध विद्या में थोड़ा सा देखते हैं, महसूस होता है जैसे कोई दूसरा है। अब उसे नेत्र बन्द करने दो।

इसके बाद ईश्वर, और फिर शक्ति व सदाशिव। ये हैं छतीस तत्त्व जो निराकार में सम्मिलित होने का पथ दर्शाते हैं।

छतीस तत्त्व ऊपरसे निचे के अनुक्रम में

1. सदाशिव
2. शक्ति
3. ईश्वर
4. शुद्ध विद्या
5. माया
6. काल
7. न्याति
8. राग
9. विद्या
10. कला
11. पुरुष
12. प्रकृति
13. अहंकार
14. चित्त
15. बुद्धि
16. मन

तन्मात्राऐं

17. दृष्टि

18. शब्द

19. गंध

20. स्वाद

21. स्पर्श ज्ञान

महाभूत

22. पृथ्वी

23. जल

24. अग्नि

25. वायु

26. आकाश

ज्ञानेन्द्रियाँ

27. नेत्र

28. कर्ण

29. नाक

30. जीभ

31. खाल

कर्मेन्द्रियाँ

32. बांहें
33. टांगें
34. जीभ
35. जनमेन्द्रियाँ
36. गुदा

पूजा पद्धोति इस यात्रा को तय करने की विधि बताती है

अर्चन पूजन से हम संस्कृत का ज्ञान, तत्त्वविचार का बोद्ध व योग का अभ्यास जोडते हैं और उसके साथ मिलाते है अपनी भक्ति व अनुराग की श्रेष्टता। इस से हमारा ध्यान केन्द्रित होता है और हम अपनी जागरूकता चक्रों में से ऊपर ले जाते हैं जिससे ऊर्जा अथवा शक्ति चेतना अथवा शिव में लीन हो जाये।

मनुष्य के शरीर में ऊर्जाके सात चक्र हैं

1. मूलाधार पहला चक्र पृथ्वी इन्द्र लं
2. स्वाधिष्टान दूसरा चक्र जल वरुण वं
3. मणिपुर तीसरा चक्र ज्वाला अग्नि रं
4. अनहत चौथा चक्र पवन वायु यं
5. विसुधा पांचवा चक्र आकाश सोम हं
6. आग्न्या छठा चक्र अन्तिम ईश्वर ॐ
7. सहस्र कहते हैं सहस्र दल पदम को जो मस्तकके शिखा अथवा कैलाश पर्बत पर है। यहां शिव भगवान सदा विराजमान हैं, और यहांसे ही शरीर छोडने के समय आत्मा बाहर निकलती है।

श्रीरामायण में भगवान की नवधा भगति का वर्णन है

1. संतोंका सत्संग
2. भगवान और देवपुरुषों की कथा-प्रसंग में प्रेम
3. अभिमानरहित होकर गुरूके चरण-कमलों की प्रेमसे सेवा व सबकी स्वार्थरहित सेवा
4. कपट छोड़कर भगवानके गुणसमूहों का गान
5. दृढ़ विश्वास से मन्त्रों का जाप
6. सर्वकार्य शान्तिसे करना और हरेक घटना को पूर्णता दिखाने का अवसर मानना
7. संसार को समभावसे भगवानमें ओतप्रोत देखना और संतों को संग भगवानके अनुभवसे भी अधिक करके मानना

8. जो कुछ मिल जाय, उसीमें संतोष करना और स्वप्नमें भी पराये दोषोंको न देखना
9. सदा सरलतासे रहना और सबके साथ कपटरहित बर्ताव करना, हृदयमें भगवानका भरोसा रखना व किसी भी अवस्थामें हर्ष और विषाद का न होने देना ।

ये हैं नव चरण भगवत भक्ति के

वेद चार हैं

1. ऋग्वेद
2. यजुर्वेद
3. सामवेद
4. अथर्ववेद

प्रत्येक वेदसे एक महावाक्य आया है

1. ऋग्वेदसे प्रज्ञानं ब्रह्मा
   प्रकृति की ज्ञान ही भगवान है
2. यजुर्वेदसे तत्त्वमसि
   वही तुम हो
3. अथर्वेदसे अयमात्म ब्रह्मा
   यह आत्मा ही परमात्मा है
4. सामवेदसे अहं ब्रह्मस्मि
   परम देवतत्त्व मैं ही हूं

हर एक वेद चार भागोंमे विभाजित किया गया है

1. संहिता	इसमें स्तुतिके गीत हैं
2. ब्रह्माण	इसमें पूजा पद्धतियां बतायी गयी हैं
3. अरण्याक	इसमें वनमें रहने वाले ऋशियों की कहानियां, भगवान व राजा की कथाऐं और अध्यात्मिक ज्ञान की प्रयोग विधि का वर्णन है
4. उपनिषद	इसमें तत्त्वज्ञान है

और फिर उपवेद भी हैं जो ज्ञान की विविध शाखायें की व्याख्या करते हैं जैसे

- आयुर्वेदः आयुर्वेद अथवा जीवन का ज्ञान
- धनुर्वेदः शस्त्रों का ज्ञान
- स्थापत्यवेदः टिकाऊ वस्तुयें निर्माण करने की विद्या

पांच मूल देव हैं जिनकी उपासना की जाती है

1. शिव
2. विष्णु
3. शक्ति
4. गणेश
5. सूर्य व नव ग्रह

पूजा जितनी सरल अथवा जितनी जटिल जैसे कोई चाहे की जा सकती है।

पूजा इन चार मेंसे किसी भी एकसे की जा सकती है।

जो कोई भी श्रद्धा और भक्तिसे एक पता, एक फूल अथवा एक फल या थोरा सा जल ही मुझे अर्पण करता है तो मैं उस प्रयास करतेहुये प्राणी का स्नेह व प्रेम देख कर स्वीकार करता हूं।

भगवद गीता 9:26

पूजा इन पांच वस्तुओं से भी की जा सकती है

1. दीप
2. धूप
3. फूल
4. नैवेद्य
5. जल

पूजा इन दस वस्तुओं से भी की जा सकती है

1. दीप
2. धूप
3. फूल
4. नैवेद्य
5. जल
6. वस्त्र
7. छाता
8. चामर
9. पंखा
10. दर्पण

पूजा इन सोलह वस्तुओं से भी की जा सकती है

1. दीप
2. धूप
3. पुष्प
4. वस्त्र
5. यज्ञोपवीत
6. रुद्राक्ष
7. सिंदूर्
8. कुमकुम
9. चंदनलेप
10. माला
11. नैवेद्य
12. जल
13. छाता
14. चामर
15. पंखा
16. दर्पण

पूजा सोलह से अधिक वस्तुओं से भी की जा सकती है

सोलहसे अधिक वस्तुओं को राजोपचार, राजाकी भेंट कहा जाता है।

ऐसी सूची में भिन्न भिन्न स्नान, महक अथवा सुगंध,मणियां, गहने, अलंकार , जिसकी भी कल्पना की जा सकती है।

शिव के पांच मुख हैं

1. सद्योजात	सत्यकी उत्पति जैसे शुद्ध अस्तित्त्व
2. वामदेव	सुन्दरदेव जो अति प्रिय है
3. अघोर	भय मुक्त
4. तत पुरुष	विश्व चेतना
5. ईशान	सब कुछ देखता है (जिससे कुछभी छिपा हुआ नहीं, जिसको समस्त दृष्टिगोचर है)

हृदयादि न्यासः अथवा षडांग न्यासः क्यूंकि शरीरके छः अंगों का स्पर्श करते हैं

1. हृदय
2. सिर का ऊपरी भाग
3. मस्तक का पिछला भाग
4. दोनों भुजांऐं आपसमें जोडो
5. त्रिनेत्र स्पर्श
6. हाथ के ऊपर हाथ आगेको घुमाओ फिर पिछेको घुमाओ और ताली बजाओ

जिस धरती पर ज्ञानका प्रकाश चमकता है वहां सात नदियां बहती हैं

1. गंगा
2. जमुना
3. गोदावरी
4. सरस्वती
5. नर्मदा
6. सिंधु
7. कावेरी

श्रेष्ट अग्नि की सात धारायें हैं

1. काली	श्याम रंग
2. कराली	विकट, बढती हुई
3. मनो-जावा	वेगवत जैसे विचार
4. सुलोहिता	उत्कृष्ट चमक
5. सुधूम्र वर्ण	बैंगनी रंग
6. उग्रा अथवा स्फुलिन्गिनी	भयानक
7. प्रदीप्ता	उजाला देनेवाली

आठ सिद्धियाँ अथवा अध्यात्मिक शक्तियां हैं

1. अनिमा	छोटा होन
2. लघिमे	हलका होना
3. महिमा	बड़ा होना
4. प्राप्ति	इच्छा पूर्ण
5. प्राकाम्य	यथेष्टता
6. इसित्व	शासनता
7. वशित्व	अधीन करना
8. सर्वज्ञात्व	सब कुछ जाननेवाला

शक्ति अथवा ऊर्जा के आठ रूप हैं

1. ब्राह्मी	सृजन करनेकी शक्ति
2. नारायणी	चेतना को दर्शानेकी शक्ति
3. माहेश्वरी	सर्वज्ञ की शक्ति
4. चामुण्डा	आवेश व अधमता को वध करनेकी शक्ति
5. कौमारी	सदा शुद्ध व पवित्र
6. अपराजिता	अजेय शक्ति
7. वाराही	बलिका शक्ति
8. नारसिंही	शूरता व वीरता की शक्ति

दुर्गा के नव रूप हैं

1. शैलपुत्री उत्साह प्रदाई देवी
2. ब्रह्मचारिणी अध्ययन प्रदाई देवी
3. चन्द्रघण्टा अभ्यास का आनन्द प्रदाई देवी
4. कूष्माण्डा शुद्ध अथवा निर्मल करनेवाली तपस्या प्रदाई देवी
5. स्कन्दमाता देवी जा दैवत्व का पालन पोषण करे
6. कात्यायनी देवी जा सदा पवित्र व शुद्ध है
7. कालरात्री देवी जा अहंकारकी अंधेरी रात का नाश करती है
8. महागौरी देवी जा महादीप्तिमान उजाला प्रदान करती है
9. सिद्धिदात्री पूर्णता अथवा सिद्धि प्रदान करनेकी देवी

नव ग्रह

1. सूर्य सूरज, ज्ञानका दीप, मोहका नाश करने वाला
2. सोम चन्द्रमा, अनुराग व प्यार का चिह्न
3. मङ्गल मंगल, सुखदाता, कल्याणकारी
4. बुद्ध ज्ञानका चिह्न
5. ब्रहास्पति देवतांओं का गुरू
6. शुक्र मोह व प्रेम दाता
7. शनैश्चर निग्रह अथवा शासन का चिह्न
8. राहु उत्तरगांठ, लक्ष्य अथवा दिशा बताता है
9. केतु दक्षिणगांठ, विघ्न व बाधा देता है

दस महाविद्याऐं

1. काली
2. बगला
3. चिन्नमस्ता
4. भुवनेश्वरी
5. मातंगी
6. शोरसी
7. धूमावती
8. त्रिपुरसुन्दरी
9. तारा
10. भैरवी

1. काली समयअतीत(समयसे पार), अंधेरा दूर करती है
2. बगला उचित समयपर हरचालको रोकती है
3. चिन्नमस्ता बलिदान करने की साहस दिखलाती अथवा देती है
4. भुवनेश्वरी प्रत्यक्ष असतित्व की श्रेष्ट व महान है
5. मातांगी हरप्रकार की सृष्टि की मापतोल है
6. शोरसी शिव और शक्ति के सोलह अंशोंको जोडती है
7. धूमावती त्याग दर्शाती है और निष्फलता दूर करती है
8. त्रिपुरसुन्दरी तीनों का सौंदर्य एक साथ
9. तारा प्रत्येक भावोंको उजागर करती है
10. भैरवी हर प्रकारके भयसे मुक्त करती है

दस दिशायें हैं और उन्के दस पालक व रक्षक हैं

1. इन्द्र	पूर्व दिशा
2. अग्नि	दक्षिण पूर्व दिशा
3. यम	दक्षिण दिशा
4. नैर्रित	दक्षिण पश्चिम दिशा
5. वरुण	पश्चिम दिशा
6. वायु	उत्तर पश्चिम दिशा
7. कुवेर	(सोम) उत्तर
8. ईशान	उत्तर पूर्व दिशा
9. ब्रह्मा	ऊपर कि दिशा
10. विष्णु	निचे की दिशा

विष्णु के दस विशेष अवतार हैं

1. मत्स्या
2. कूर्म्म
3. वाराह
4. नृसिंह
5. वामन
6. परशुराम
7. राम
8. कृष्ण
9. बुद्ध
10. काल्की

रुद्र के ग्यारह रूप हैं

1. केदार
2. भीमाशंकर
3. बैजनाथ
4. नागेश्वर
5. रामेश्वर
6. औंकारेश्वर
7. ममलेश्वर
8. महाकाल
9. मल्लिकार्जुन
10. त्र्यंबक
11. सोमनाथ

बारह ज्योतिर् लिन्ग है

1. सोमनाथं
2. मल्लिकार्जुनं
3. महाकालं
4. औंकारेश्धरं
5. केदारनाथं
6. भीमशंकरं
7. विश्धेश्धरं
8. त्र्यम्बकं
9. बैजनाथं
10. नागेश्धरं
11. रामेश्धरं
12. घुष्मेश्धरं

वेदोंमें दिये हुए मौलिक देवता, अदिति के पुत्र, अदित्या बारह हैं

1. इन्द्र
2. अग्नि
3. मित्रा
4. वरुण
5. पूष
6. अर्यमन्
7. सूर्य
8. सोम
9. भग
10. वसु
11. सवितर्
12. अश्विन्

शक्ति पीठ 51 हैं।
सर्व बद्र मण्डल के देवता 57 हैं।
सिद्ध पीठ 108 हैं।
प्रत्येक देवताके सहस्र नाम हैं।
मस्तक के चक्रमें सहस्र दल हैं।

अब हम पहुंच गये
उत्तर मिमांसा तक

अर्थात वेदान्त, जिसमें सब कुछ एक हो जाता है।

वेदान्तकी विख्यात घोषणा है कि परमात्माही सत्य है और जगत मिथ्या है।

ब्रह्मसत्याजगतमित्या

चेतना सदेव समान है और इसलिये वह सत्य व टिकाऊ है। जगत सदेव बदलता रहता है और इसलिये वह सत्य नही है।

मायाके तीन सरूप हैं

1. वेदांत की माया
2. तन्त्र की माया
3. सांख्या की माया

1. सांख्या की माया की परिभाषा है कि वह भ्रमजाल है और सचाईको धुंधलाती या छुपा देती है।

2. तान्त्र की माया श्रेष्ट ईश्वरीय मांका सरूप कही जाती है।

3. वेदांत की माया चेतना की सीमा को कहा जाता है।

श्री विद्या का कादिमन्त्र माया के तीन रूपों की व्याख्या करता है

1. भगवान अपनेको कैसे देखता है

2. भगवान जगतको कैसे देखता है
और जगत भगवानको कैसे देखता है

3. जगत अपनेको कैसे देखता है

माया जैसे भ्रमजाल
माया जैसे असीम सकल प्रकृति
माया जैसे एक चेतना अपने से एक ताल अथवा अविरोध स्थतिमें

मन्त्र है

क ए ई ल ह्रीं
ह स क ह ल ह्रीं
स क ल ह्रीं

यह ज्ञान होना उत्तम आचरण है, कुलाचरण

जब हम, बिन्दुमें केंद्रित ध्यान अथवा समाधि में बैठे हैं या बाहरके जगतमें विचरण कर रहे हैं तो भी यदि एक ही भाव में रहसकें, तो हम आदर्श जो इशोपनिषद में बताया गया हैं, उसका सरूप बन जाते हैं।

मनुष्य जो शरीरसे पूजा करता है मृत्युको जीत लेता है और जो अन्तःकरण के उत्साह अथवा आत्मासे पूजता है वह अमर हो जाता है।

ईषोपनिषद

हम तब जान जाते हैं कि प्रकृति में परिवर्तन निरंतर होती रहती है

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

चेतना के अनुभवमें ये सब तीनप्रकरण सदा गतिमान प्रतीत होते है।

और वह चेतना मैं ही हूं

ॐ नमः शिवाय

मैं भगवान शिव को प्रणाम करता हूं।

सत्यका रूप मनके विचारों से छिपा हुआ है, विचार जे लालसा व वासनासे भरे हुये हैं।

परन्तु आत्मा सदेव प्रकाशमें है उनकी किरणोमें नही, और वह आत्मा मैं हूं।

ॐ -- प्रकाश -- परमात्मा

अधिक जानकारी के लिये या यदि कोइ प्रश्न करना है तो कृप्या हमें संपर्क करें

www.shreemaa.org